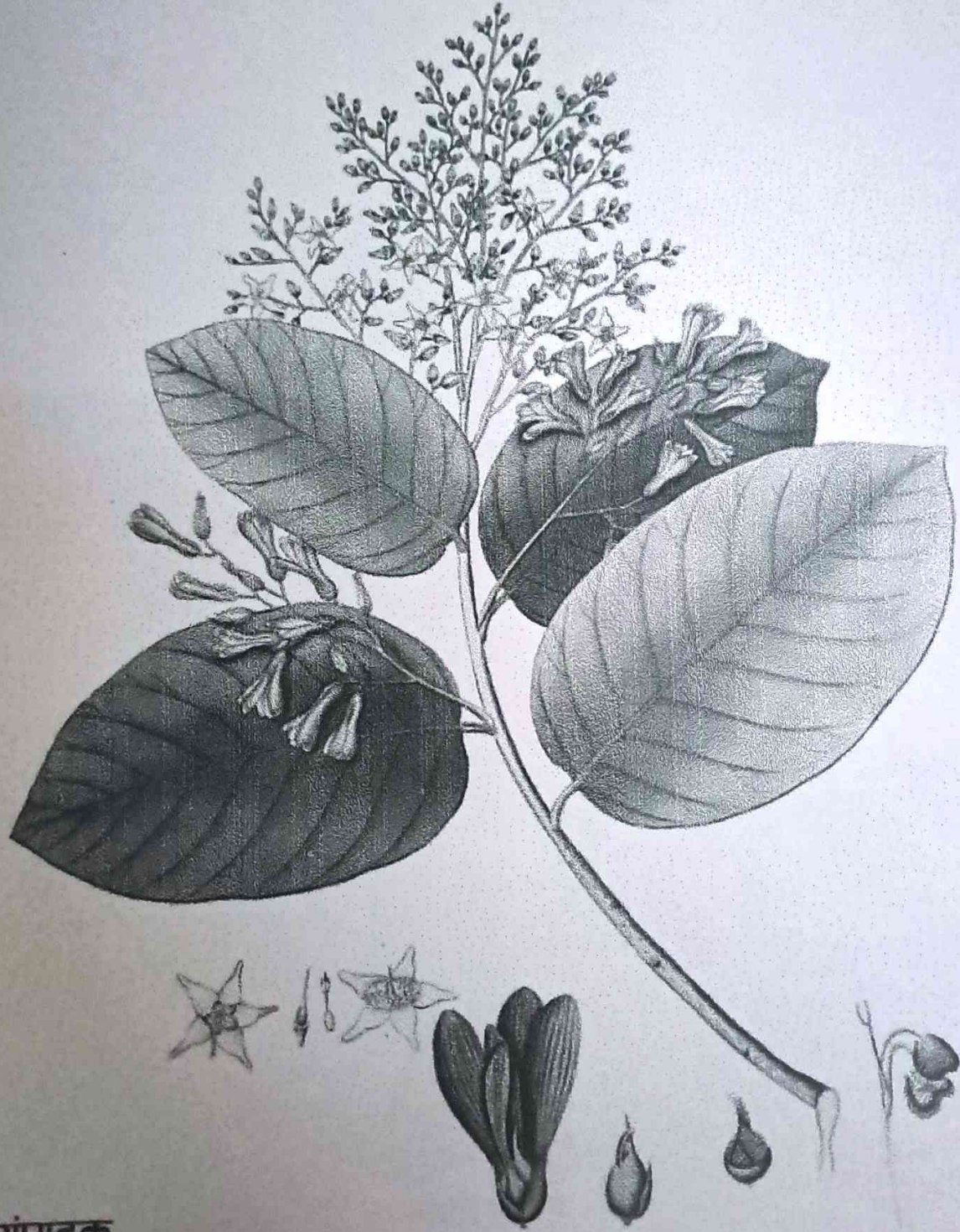


साहित्य और पर्यावरण



संपादक
डॉ. दीपक सिंह
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

22. फाँस उपन्यास में अभिव्यक्त पर्यावरण संकट और किसान जीवन —श्रीमती स्नेहलता खलखो, डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय	163
23. महाकवि कालिदास के काव्यों में प्रकृति का स्वरूप —महेश कुमार अलेंद्र	170
24. आदिवासी कविता में पर्यावरण चिंतन —मनोरमा पाण्डेय	181
25. छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'पखरा ले उठे आगी' में व्यक्त प्रकृति और संस्कृति का समन्वय —डॉ. (श्रीमती) अलका पंत, श्रीमती वंदना रानी खाखा.	189
26. हिंदी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण : विजय राठौर के काव्य के संदर्भ में —गोवर्धन प्रसाद सूर्यवंशी, डॉ. पुनीत कुमार राय	197
27. ऋषि दयानंद के साहित्य में पर्यावरण चिंतन —डॉ. अजय आर्य	208
28. भारत में पूँजीवाद और जलवायु संकट —धवल गुप्ता	214
29. पर्यावरण एवं राजनीतिक चिंतन —मुकेश कुमार सिंह	220
30. प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन —डॉ. कमलेश दुबे	225
31. आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति —कसीरा जहाँ	234
32. छायावादीयों कवियों के काव्य में प्रकृति चित्रण-निराला के संदर्भ में —शिवशंकर राजवाड़े	243
33. सत्यभामा आडिल की आधुनिक कविताओं में प्रकृति —सीमा मिश्रा	250
34. पर्यावरण संरक्षण में समकालीन हिन्दी साहित्य एवं मीडिया की भूमिका —रश्मि पाण्डेय	254
35. आधुनिक काल में प्रकृति —प्रियंका मिश्रा	260
36. मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में प्रकृति —अफीफा फातिमा शेक, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	270
37. डॉ. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग' का रचना संसार और प्रकृति के विविध रंग —श्रीमती संगीता शर्मा	275
38. प्रेमचंद की कहानियों में प्रकृति वर्णन—सतीश कुमार धीवर	287
39. आदिवासी साहित्य में जल, जंगल और जमीन का संघर्ष —कल्पना सिदार	293
40. अज्ञेय के काव्य में प्रकृति —ज्योति कमल	299
41. मंगलेश डबराल की कविताओं में जल, जंगल और ज़मीन —श्रीमती रामेश्वरी दास	306
42. गांधीवादी दर्शन और पर्यावरण संरक्षण —श्रीमती निशा शर्मा	314
43. तुलसीदास के काव्य में प्रकृति चित्रण —नेहा विश्वकर्मा	319
44. Ecopoetry and Sustainable Development —Dr. Nidhi Mishra	324
45. Conservation of some Medicinal Plants in Balrampur, C.G. —Laxmi Singh	330
46. पर्यावरण असंतुलन : 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास के सन्दर्भ में —लक्ष्मी के. एस.	337



मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में प्रकृति

अफीफा फातिमा शेक (शोधार्थी)

वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास),
पल्लवरम, चेन्नई (तमिलनाडु)

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

असिस्टेंट प्रोफेसर

वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास)
पल्लवरम, चेन्नई (तमिलनाडु)

प्रस्तावना

प्रकृति अपने आप में सुंदर है, और मानव स्वभाव से ही सौंदर्य प्रेमी माना गया है। इसी कारण प्रकृति और मानव का संबंध इतना ही पुराना है जितना कि इस सृष्टि के आरंभ का इतिहास। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक जिन पाँच तत्वों से सृष्टि की उत्पत्ति और विकास मानते हैं वह भी तो अपने मूल स्वरूप में वस्तुतः प्रकृति के ही अंग है। फिर यह मान्यता भी प्रचलित और प्रसिद्ध है कि “साहित्य-सर्जन की प्रेरणा व्यक्ति को प्रकृति के रहस्यमय कार्यों एवं गतिविधियों को देखकर ही प्राप्त हो सकती है।”¹ मानव और प्रकृति का संबंध अनादि और चिरंतन है। इसी कारण मानव जीवन की उपलब्धि साहित्य और प्रकृति का संबंध भी उतना ही अनादि, चिरंतन और शाश्वत है जितना कि मानव और प्रकृति का। “प्रकृति सदा से ही मानव की चिरसंगी रही है। सृष्टि के प्रारंभ में मानव ने प्रकृति के गोद में ही अपनी आंखें खोली। प्रातः कालीन उषा की लालिमा, पेड़ों पर समूह में बैठी हुई चिड़ियों की चहचहाहट, रात्रि के समय नभ मंडल पर टिमटिमाते तारे, आकाश में छाई हुई काली घटाएं, बारिश ना जाने कितने ही प्राकृतिक सौंदर्य सदा से ही मानव आकर्षण का केंद्र रहे हैं। प्रकृति का चित्रण करते समय प्रकृति में आने वाले पेड़, नदी, फूल, पंछी आदि सब का चित्रण किया जाता है।”²

आधुनिक हिंदी साहित्य जगत की उभरती युवा कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ का सृजनात्मक साहित्य हिंदी की अनमोल निधि है। हिंदी कथा साहित्य कि वे सशक्त लेखिका है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने एक सफल कहानीकार के रूप में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने भी अपनी कहानियों में प्रकृति के सभी रूपों का चित्रण किया है। संसार में प्रकृति अनेक रूपों में व्याप्त है। यह एक विराट सत्ता है। यह कभी मधुर सज्जित रूप में हमारे सामने आती है तो कभी रूखे और कर्कश रूप में। यह कहीं सुंदर विशाल है तो कहीं उग्र और भयंकर। अपनी चिर साहचर्य की भावना के कारण साहित्यकार प्रकृति के सभी रूपों में लीन होता है। एडोनिश का रक्त लिली के फूल, रक्स की घाटी : शबे फितना, अनामा, कठपुतलियाँ आदि में संकलित इनकी कहानियाँ न सिर्फ कहानी कला की दृष्टि से बल्कि सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्तिकरण की दृष्टि से भी अपना विशेष महत्व रखती है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'एडोनिश का रक्त लिली के फूल' में मन को आकर्षित करने वाला रूप चित्रित किया गया है। प्रकृति में वर्षा के साथ-साथ पेड़ पौधे लता आदि की भरमार होती है। प्रकृति में मौसम के अनुसार बदलाव या परिवर्तन होते रहते हैं। बारिश के दिनों में प्रकृति एक नया रूप ले लेती है। बारिश मानवीय जीवन और प्रकृति के लिए जरूरी बात है। आषाढ़ हो या श्रावण मास बारिश का अलग ढंग का नजारा हमें नजर आता है। वर्षा का खूबसूरत वर्णन लेखिका ने कहानी में लेफ्टिनेंट अनुज नायर के माध्यम से वर्णित किया है। अनुज नायर अम्बिका के घर रात टिक जाता है। दूसरे दिन उसे युद्ध पर निकलना था। अचानक बारिश शुरू हो जाती है। वह बारिश को देखता हुआ कहता है "विंडोपैन पर गिरती बारिश की बूंदों की सम्मोहक ताल उन्हें किसी अनजान द्वीप पर लिजा रही थी, जहाँ निषिद्ध शब्द ही नहीं था, बल्कि शब्द थे कहाँ महज ध्वनियाँ थीं। पत्तियों से, हवा से, प्रपात से, अजगरों से, सिंहों से और हाथियों से उधार ली हुई।"³ अनुज नायर बारिश की सुंदरता को देखने के लिए बाहर आ जाता है "बाहर किसी रात के निशाचर पक्षी ने बेचैनी से पंख फड़फड़ाए, भीतर भी कुछ तो था जो जवाब में पर मारता रहा पिंजरे की तीलियों पर। ठीक तीन मिनट बाद इस बिजली के खड़कने की ध्वनि ने धरती तक की अपनी यात्रा तय की और भीषण गड़गड़ाहट।"⁴

मनीषा कुलश्रेष्ठ के साहित्य में प्रकृति के अलग-अलग रूपों का चित्रण मिलता है। उसमें पेड़-पौधे, पानी, फल, फूल, तारों का चित्रण भी हमें पढ़ने को मिलता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी रक्स की घाटी : शबे फितना में लेखिका प्रकृति का वर्णन करते हुए कहती है कि "वे तीनों रात भर हल्के हरे पत्तों के बीच अपने सफेद चेहरे और गुलाबी से बैंगनी पड़े होठ छिपाये रहीं, बैंगनों और शलगमों के इस खेत में वे तीनों अभी तक खेत का

ही हिस्सा लग रही थी।”⁵ गजाला और लुबना के बातों का वर्णन लेखिका प्रकृति के माध्यम से करते हुए कहती है “दो शहर में गजरा ए बैंगनी होठ हरी लताओं में हिलते हुए फुसफुसाए। आकाश में पीले सितारों के कुछ झुंड अजीब तरीके के आकार में बन-बिगड़ रहे थे।”⁶

हिंदी कहानियों के प्रकृति चित्रण में विशाल नदियों की तट रेखा एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने भी अपनी कहानियों में नदी, नदियों के किनारे बसे पवित्र स्थल आदि का वर्णन रोचक ढंग से किया है। ‘अनामा’ कहानी की नायिका डॉ. शंभू दयाल सिंह के चाचा के तीसरी मंजिला घर के ऊपर से गंगा नदी की सुंदरता देख कहती है “ओ माय गॉड! कितना खूबसूरत!!! इस तरफ देखो गंगा किस कदर सुंदर फैली है, घाटों के गुंबदों पारछ गंगा की तरफ जाने वाला रास्ता कैसा मट मैला फीते जैसा दिख रहा है, और उस तरफ वह भीड़ भरा चौक और उससे निकलती गलियों का दृश्य किसी हाथ-पैर चलाते, उलटे पड़े गुबरेले सा दिख रहा है और हवा यहाँ साफ भी है।”⁷ मनीषा कुलश्रेष्ठ ने ‘अनामा’ कहानी में पर्यावरण प्रदूषण का भी वर्णन किया है। लेखिका गोवर्धन पर्वत के बारे में बताती है कि “गोवर्धन पर्वत भी अब क्या पर्वत रह गया है उसके सिरे, पंछ और चट्टान तक का बाजार बनाकर बैठे हैं।”⁸ अनामा पत्र के माध्यम से लेखिका कहती है कि “आजकल गोवर्धन में विकास के नाम पर बहुत कुछ नष्ट होने लगा है। यहाँ की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत प्रदूषित होने लगी है।”⁹

‘फांस’, ‘कटपुतलियाँ’ कहानी में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने आंधी का दृश्य प्रस्तुत किया है। इसमें प्रकृति पर मानवीय गुणों का आरोप किया है। मानव जीवन और प्रकृति एक दूसरे के साथ-साथ चलते रहते हैं। प्रकृति के कारण ही मानव जीवन बसा हुआ है। मगर कभी-कभी प्रकृति में कुछ परिवर्तन इस तरह का होता है जो आंधी बनकर, बादल बन कर, कभी-कभी इंसानी जीवन को पीड़ित करता है। मानव जीवन को शक्ति और प्रेरणा देने वाली यह प्रकृति कभी-कभी ऐसा रूप धारण करती है जिससे मानव संकट की गहराई में खो जाता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की ‘फांस’ कहानी में इसी आंधी भरे जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया है। “हवा सचमुच बहुत तेज हो चली थी, दिया-सलाई जलाना कठिन हो रहा था। बड़ी मुश्किल से लालटेन जली खिड़कियों के बंद पेड़ों से टकरा रही थी। सूखी, मोटे कणों वाली रेत एकदम बरसात की तरह। ऐसी आंधी और इससे जुड़ी आवाजें किसी अनिष्ट की आशंका क्यों जगाती हैं? खिड़कियों में बने घोंसलो में बैठी चिड़िया पंख फड़फड़ाने लगीं, आशंका क्यों जगाती हैं? खिड़कियों में बने घोंसलो में बैठी चिड़िया पंख फड़फड़ाने लगीं, खिड़कियों के पल्ले खुल चुके थे और खिड़कियों के सिंखाचों के बीच बामुश्किल अटके घोंसले, तेज हवा से ‘अब गिरेगी कि तब गिरे’ की हालत में थे। सब घोंसलों में चिड़ियों के

अंडे-बच्चे थे। उसे हैरानी हुई प्रकृति पर। वह सोच में पड़ गयी। चिड़ियों के घोंसले बनाने का मौसम और तूफानों का मौसम यह ही क्यों होता है।”¹⁰ कहानी की पात्र अंतिमा कहती है हवा खाली कमरों में घुस आई थी। खिड़की दरवाजे खटखटा रहे थे। आंधी के जोर से जिन हवेली की पुरानी दीवारें कांप सी महसूस हो रही थी। वातावरण विचित्र ध्वनियों से गूँज उठा था।¹¹ “‘कटपुतलियाँ’ कहानी में मनीषा कुलश्रेष्ठ कहानी में पात्र सुगना के कहती है कि ‘भंवरा गई थी हवा गोल गोल चक्कर काट तेज चक्रवात से रेत की लहरों में हुई उधल-पुथल से ना जाने कितने रेतीले रेंगने वाले जानवर निकलकर लंबी घास की तरफ भागे। यह टेढ़ा-टेढ़ा रेंगने वाला रेत का पीला सर्प लहरा कर भेड़ों के झुंड की तरफ बढ़ा। भेड़ों का शांत झुंड उठकर मिमियाने लगा, किशोर चारवा आंधी में ही अपनी भेड़ों को पुकारता इधर-उधर भागने लगा।”¹²

मनीषा ने प्रकृति के वर्णन में समुद्र और पक्षियों का चित्रण भी किया है। समुद्र में घूमने का मजा ही कुछ अलग होता है। ‘खरपतवार’ कहानी में लेखिका ने समुद्र का और चट्टानों पर उड़ने वाले पंखियों का वर्णन बखूबी किया है। कहानी के पात्र डेनियल और एंजेला दोनों समंदर में मन के सुकून को ढूँढ़ते हुवे वहाँ का वर्णन इस प्रकार करते हैं “आगे समंदर वे बालू पर बैठ गये। चट्टानों पर समुद्री पंखी शोर मचा रहे थे। ऊपर आकाश में सफेद गर्दन वाले भूरे बाज कलाबाजियाँ खाते उड़ रहे थे।”¹³

प्रकृति में फूल एक ऐसा हिस्सा है जो सुंदर, कोमल और अपनी गंध से सभी को अपनी ओर खींच लेता है। आम इंसान से लेकर लेखक और कवियों को अपना गीत गाने के लिए मजबूर कर देता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी ‘कटपुतलियाँ’ में नायिका सुगना को जोगिंदर फूल के साथ तुलना करते हुए कहता है “तुझसे सूग? तु तो केवड़े का झाड़ है कंटीला मगर महकता हुआ सुगंध से।”¹⁴

प्रकृति का चित्रण प्राचीन काल से हमारे कवियों और ऋषि-मुनियों और महाकाव्य में पन्ने-पन्ने पर नजर आता है। इस विरासत का सिलसिला आगे बढ़ाने का काम हमारे हिंदी साहित्य में कवि कहानीकार उपन्यासकार आदि ने कर दिया है।

निष्कर्ष :

मनीषा के प्रकृति चित्रण में कल्पना की ऊँचाई, सौंदर्य की परख, सरुज्ञान कि मौलिकता, प्रवाहमय अभिव्यक्ति, संवेदना की उत्कर्षता तथा असाधारण चित्रात्मकता है। भावों के अंकन में लेखक के प्रकृति चित्र सहायक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि मनीषा जी की सभी कहानियाँ सौंदर्य से परिपूर्ण है। मनीषा ने अपने कहानियों में नारी सौंदर्य के साथ-साथ प्रकृति में आने वाले पेड़, वर्षा, नदी, नाले, पर्वत, फूल, आदि का सौंदर्य चित्रण

किया है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में नारी सौंदर्य हो या प्रकृति सौंदर्य हो जिसका सही ढंग से चित्रण कहानियों में मिलता है।

सन्दर्भ सूची :

1. <http://evirtualguru.com>
2. <https://quizzesansar.com>
3. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'एडोनिस का रक्त लिली के फूल (रंग-रूप, रस-गंध-2)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ.446
4. वही, पृ. 447
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रक्स की घाटी : शबे फितना (रंग-रूप, रस-गंध-2)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ.465
6. वही पृ.466
7. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'अनामा (रंग-रूप, रस-गंध-2)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ. 498
8. वही पृ. 502
9. वही पृ. 502
10. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'फांस (रंग-रूप, रस-गंध-2)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ. 330
11. वही पृ. 331
12. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'कटपुतलियां (रंग-रूप, रस-गंध-1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ. 135
13. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'खरपतवार (रंग-रूप, रस-गंध-2)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ.403
14. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'कटपुतलियाँ (रंग-रूप, रस-गंध-1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृ.137

ISBN : 978-81-19335-59-6

RUDRADITYA PRAKASHAN

109, H/R/3-N, O.P.S. Nagar,
Kalindipuram, Prayagraj—211011
Mobbille : 8187937731, 8175030339
Email : rudraditya00@gmail.com

Branch : Kaushambi Road, Jhalwa, Prayagraj

Edition : 2023

Price : ₹ 450.00

© Writer

Type Setting : Rudraditya Prakashan D.T.P. Unit

Cover Design : Raj Bhagat

Bhargava Printer

साहित्य और पर्यावरण